रॉक बैंड्स

नई धुन, नए जोश के साथ मचा रहे धमाल

युवाओं की रॉक म्यूजिक की तरफ बढ़ती लहर ने देश में रॉक बैंड्स को तेजी से उभरने और विभिन्न शैलियों में संगीत पेश करने का मौका दिया है। हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में गाने वाले ये रॉक बैंड्स देश भर में नई ऊर्जा और नया जोश भर रहे हैं। इनमें से तमाम बैंड्स ने अपनी धुनों और सामाजिक संदेशों के जरिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान बनाई है। विविध शैलियों में संगीत बजाने वाले लोकप्रिय रॉक बैंड में इम्फाल टॉकीज एंड द हाउलर्स, जीरो, पेंटाग्राम, अग्नि, थर्मल एंड ए क्वार्टर, इंडस क्रीड, परिक्रमा, अवियल, सोलमेट, द क्लोन्स, अगम शामिल हैं।

शशांक दीक्षित
यूपी आइडल लीड सिंगर ऑफ द सफर बैंड

ड्रोन शो और ऑगमेंटेड रियलिटी

आईटी हब बेंगलुरु के स्टार्टअप माहौल से निकला 'रूबरू' बैंड टेक्नोलॉजी और म्यूजिक को मिलाकर परफॉर्म करता है। इसके लाइव परफॉर्मेंस में एलईडी ड्रोन शो और ऑगमेंटेड रियलिटी शामिल रहती है।

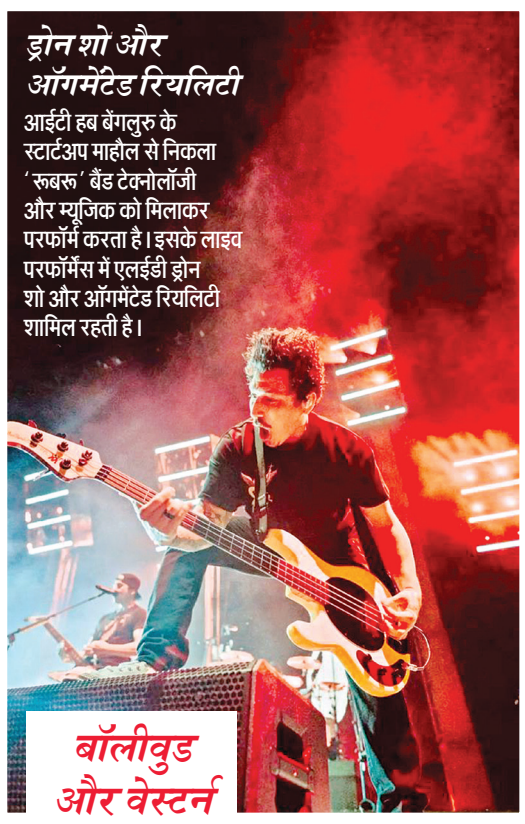

बॉलीवुड और वेस्टर्न का मिश्रण

मुंबई के 'साउंड करी' बैंड ने बॉलीवुड और वेस्टर्न रॉक का जबर्दस्त मिश्रण किया है। इनके गानों में इलेक्ट्रॉनिक और इंडी टच देखने को मिलता है। नेटफिल्क्स सीरीज अंडरग्राउंड बांबे में इसका 'सिटी लाइट्स बर्न' है।

- देश के उभरते बैंड्स ने बदल कर रख दिया संगीत का स्वाद
- रॉक बैंड मनोरंजन के साथ ला रहे हैं विचारों की नई लहर

बीट्स नहीं, बोल का अर्थ भी देखती आज की पीढ़ी

आज की युवा पीढ़ी सिर्फ बीट्स नहीं, बोलों में भी अर्थ ढूंढती है। ऐसे में ये रॉक बैंड न केवल मनोरंजन कर रहे हैं, बल्कि विचारों की एक नई लहर भी ला रहे हैं। रॉक बैंड्स के युवा कलाकार अपने अनूठे संगीत से देश की म्यूजिक इंडस्ट्री को एक नया मुकाम देकर साबित कर रहे हैं कि भारत सिर्फ एक संगीत प्रेमी नहीं बल्कि संगीत निर्माता देश भी है।

लाइव कॉन्सर्ट की देश में बढ़ रही दीवानगी

देश में लाइव कॉन्सर्ट की मांग भी बढ़ी है। गन्स एन रोजोज, मरून 5, कोल्डप्ले, ब्रायन एडम्स और एनरिक इग्लेसियस को देखने के लिए दर्शकों को जो चीज आकर्षित कर रही है, वह है पुरानी यादें। 'कोल्डप्ले' ने इसी साल अहमदाबाद में दो लाख से ज्यादा दर्शकों के साथ अपना सबसे बड़ा शो किया था। बीते दिनों मुंबई के महालक्ष्मी रेसकोर्स में 'गन्स एन रोजेज' प्रस्तुत किया। इससे पहले कनाडा के रॉक स्टार ब्रायन एडम्स ने शिलांग, गोवा और कोलकाता सहित सात शहरों में प्रस्तुति दी थी।

हार्ड रॉक का फ्यूजन

कोलकाता का 'अग्निवीणा' रवींद्र संगीत और हार्ड रॉक का अनूठा फ्यूजन है। 70 के दशक में बना यह बैंड बांग्ला साहित्य और लोकगीतों को रॉक के साथ प्रस्तुत करता है। स्पॉटिफी पर इसके एकला चलो के रॉक वर्जन ने जमकर धूम मचाई थी। 1998 में गठित 'फॉसिल्स' बैंड को भी कोलकाता का अग्रणी हार्ड रॉक बैंड माना जाता है।

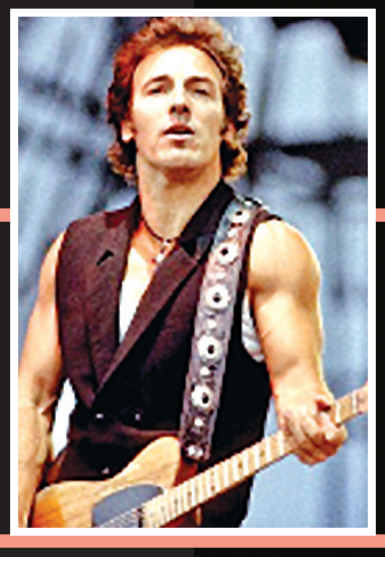

'अनहद' में तीखे सामाजिक बोल

लखनऊ का 'अनहद' बैंड अपने तीखे सामाजिक बोल और रफ रॉक स्टाइल के लिए जाना जाता है। इसका गाना 'मौन क्यों है देश?' युवाओं के बीच क्रांति की तरह वायरल हुआ था। स्पॉटिफी और वॉयनक पर इसका एलबम 'आवाजें' ट्रेंड कर चुका है।

- **ग्रामीण जीवन कर दिया जीवंत :** पटना के 'माटी बैंड' ने हिंदी में ग्रामीण जीवन और संघर्ष को रॉक धुन में पिरोया है। इसके गीत 'धरती बोले' को ऑल इंडिया रेडियो और कई राष्ट्रीय चैनलों ने प्रसारित किया है। बैंड ने राष्ट्रीय युवा महोत्सव में लाइव परफॉर्म करके 'फोक-रॉक फ्यूजन कैटेगरी' में पहला स्थान पाया था।
- **कविता को रॉक बनाने का हुनर :** भोपाल का 'लफ्ज' बैंड हिंदी कविता को रॉक में बदलने का अनूठा कमाल दिखाता है। इसका कवि दुष्यंत कुमार और गजानन माधव मुक्तिबोध की रचनाओं पर आधारित एलबम 'अनकहे गीत' को साहित्यिक और संगीत दोनों जगह जमकर सराहना मिली है।

सोशल मीडिया में वीडियो बनाने को एक्टिंग न समझें

बॉलीवुड का सितारा बनने के लिए बरेली से तमाम युवा मुंबई का रुख कर रहे हैं। इनमें से अधिकतर को लगता है कि वे भी अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा और दिशा पाटनी की तरह सितारे बन जाएंगे, लेकिन मायानगरी में छोटे-बड़े पर्दे पर काम करने वाले कलाकारों का कहना है, यदि आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हैं तो यहां टिकना मुश्किल है। मुंबई आने से पहले बरेली और दिल्ली के थियेटर में एक्टिंग सीखना जरूरी है। यहां काम मिलना कठिन नहीं है, किंतु लगातार मिलते रहना मुश्किल है। मुंबई में धक्के खाने से पहले अपनी अदाकारी पर काम करें। सोशल मीडिया में वीडियो बनाने को एक्टिंग न समझें। सफल कालाकार बनने में उम्र लग जाती है।

बॉलीवुड में काम मिलना कठिन नहीं, किंतु लगातार मिलना मुश्किल

एक्टिंग के लिए इंजीनियर की नौकरी छोड़ी

- सिविल लाइंस के आवास विकास कालोनी निवासी फरीन दो साल पहले थिएटर शुरू किया। 12-13 शो किए। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के आर्टिस्टों से सीखने का मौका मिला। एक शॉर्ट फिल्म बदायूं में की, जिसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी के भाई के साथ का काम करने का मौका मिला। इसके बाद साफ्टवेयर इंजीनियर की नौकरी छोड़कर एक्टिंग के सपने का पीछा करते हुए मुंबई पहुंच गईं। फरीन सनशाइन पिक्चर्स में एक ओटीटी प्लेटफार्म में डबल रोल निभा रही हैं। एक थिएटर कंपनी के साथ वर्कशाप कर रही हैं। वह कहती हैं, अपने अंदर के विद्यार्थी को हमेशा जिंदा रखें, रोज कुछ न कुछ सीखने को मिलेगा।

फरीन

बैकअप करियर जरूर साथ रखें

सुभाषनगर की गलियों से निकलकर सृष्टि माहेश्वरी ने छोटे पर्दे पर बड़ी पहचान बनाई है। कुमकुम भाग्य, सीआईडी, स्टार प्लस के शो दिव्य दृष्टि, अदालत, लेट्स मीट आदि में काम कर रही हैं। वह 13 साल पहले बरेली से बॉलीवुड गयी थीं। उनका कहना है कि यदि कोई नौकरी करते हैं तो उसमें उम्मीद होती है कि भविष्य में आगे बढ़ेंगे, लेकिन एक्टिंग की दुनिया में हमेशा काम की कोई गारंटी नहीं है। प्रतिस्पर्धा बहुत है, इसलिए हमेशा एक बैकअप करियर जरूर साथ रखें।

अभिनय में भाव की झलक दिखे

मायानगरी का सफर कठिन है, लेकिन हर किसी की अपनी यात्रा और किस्मत है, किसी को जल्दी किसी को देर से फल मिलता है। यह कहन' है, 2019 में फरीदपुर के छोटे से गांव से निकलकर बॉलीवुड में काम कर रही सवी तोमर का। वह अपने एक्टिंग स्किल्स पर आज भी रोज मेहनत करत। हैं। उनका कहना है कि एक्टिंग ऐसी होनी चाहिए, जिसमें भावों की झलक दिखे। मैंने डेढ़ साल तक ऑडीशन दिए, तब जाकर एक टीवी शो में पीछे खड़े होने का रोल मिला, इसके बाद शॉर्ट फिल्में मिलीं। एक-दो गाने किए। यहां आने से पहले थिएटर करना बहुत जरूरी है।

लेखिका
सव्या सिंह तोमर

जॉन अब्राहम की 'तेहरान' थिएटर में नहीं रिलीज हो सकती थी

जॉन अब्राहम की नई फिल्म राजनीतिक जासूसी थ्रिलर 'तेहरान' सीधे ओटीटी पर रिलीज हुई। सच्ची घटनाओं से प्रेरित इस फिल्म में दिखाया गया है कि एसीपी राजीव कुमार (जॉन अब्राहम) दिल्ली में इजराइली दूतावास के पास हुए बम विस्फोट के बाद एक सीक्रेट मिशन पर हैं। कहानी आगे बढ़ने के साथ राजीव खुद को भारत और इजराइल के साथ ईरान की राजनीति के बीच फंसा हुआ पाते हैं। फिल्म में जॉन अब्राहम के साथ मानुषी छिल्लर और नीरू बाजवा भी हैं। जॉन ने बताया कि 'तेहरान'को सिनेमाघरों में रिलीज करने की कोशिश में लगा कि यह फिल्म शायद कभी रिलीज ही नहीं हो पाएगी। सेंसर और अन्य कारणों से फिल्म को मंजूरी मिलने की संभावना बेहद कम थी। लेकिन विदेश मंत्रालय का सहयोग मिला, कुछ सीन काटने पड़े, और फिल्म को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज करने का रास्ता खुल गया।

जासूसी थ्रिलर : सारे जहां से अच्छा

नेटफ्लिक्स पर स्वतंत्रता दिवस के मौके पर स्ट्रीम हुई राष्ट्र भक्ति से भरपूर इस सीरीज में देश की इंटेलिजेंस एजेंसियों के ऑपरेशन्स की इनसाइड स्टोरी है। कई वेब सीरीज और फिल्मों में एक्टिंग का लोहा मनवा चुके प्रतीक गांधी 'सारे जहां से अच्छा' में जासूस बनकर लौटे हैं। कहानी 70 के दशक के भारत की है। इस जासूसी थ्रिलर के केंद्र में सतर्क और दृढ़ इरादों वाले खुफिया अधिकारी विष्णु शंकर (प्रतीक गांधी) हैं। उन्हें एक गुप्त परमाणु खतरे को नाकाम करने का मिशन सौंपा गया है। विष्णु को अब विश्वास, त्याग और देशभक्ति के बीच संघर्ष करना है। इस सीरीज में सनी हिंदुजा, सुहैल नय्यर, तिलोत्तमा शोम, कृतिका कामरा, रजत कपूर और अनूप सोनी भी हैं।

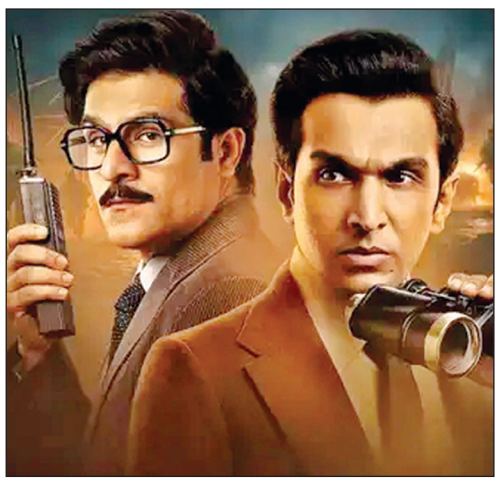

इस बार दो जॉली का जज साहब के साथ धमाल

अक्षय कुमार और अरशद वारसी की फिल्म 'जॉली एलएलबी- 3' का टीजर बता रहा है कि इस बार इन दोनों जॉली के साथ डबल मजा होने वाला है। इनके बीच फिल्म में एक किरदार ऐसा भी है जो दोनों जॉली पर भारी पड़ सकता है, ये किरदार सौरभ शुक्ला के रूप में जज साहब का है। जॉली एलएलबी-3 सिनेमाघरों में 19 सितंबर को रिलीज होगी। इससे पहले इस फिल्म के दोनों पार्ट बॉक्स ऑफिस पर हिट रहे हैं। साल 2012 में अरशद वारसी ने सबसे पहले जॉली एलएलबी फिल्म की थी।